ISSN No. : 2394-0344 Remarking : Vol-2* Issue-1*June-2015

डॉ0 धर्मवीर भारती कृत 'अंधा युग' आधुनिकता के संदर्भ में

पिन्टू रावल
शोध छात्र ,
हिन्दी विभाग,
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय,
रोहतक (हरियाणा)

सारांश

धर्मवीर भारती ने इस कृति में महाभारत युद्ध के माध्यम् से आधुनिक युग बोध को उभारा है कि किस प्रकार महाभारत काल के बह्मास्त्र की जगह वर्तमान युग के परमाणु बमों ने ले ली है। जिनकी तबाही का मंजर मानव 'हिरोशिमा', 'नागासाकी' पर हुए हमलों के रूप में देख चुका है। आज जो युद्ध की स्थिति बनी हुई है उससे पूरा विश्व भय के साये में जी रहा है। इस गीति नाट्य के पात्रों की जैसी मानसिकता उस समय थी ठीक वैसी ही मानसिकता आज के मानव की है। जा आगे चलकर कहीं ना कहीं विश्वयुद्ध का कारण बनती जा रही है। बड़े–बड़े राष्ट्र स्वार्थी–भाव और अपने लाभ को ही प्राथमिकता देते हैं और विश्व को इस घोर संकट से उभारने का कोई सार्थक प्रयास नहीं करत। भारती जी ने इस कृति के माध्यम से जीवन में व्याप्त विसंगतिया व टूटते मानव मूल्यों और मर्यादाओं का सशक्त चित्रण किया है। महाभारत का वह युद्ध वर्तमान युग के अंधेपन को व्यक्त करता है। इसलिए यह नाट्य कृति आधुनिक युग की समस्याओं को हमारे सामने रखती है।

मुख्य शब्द : महाभारत, आधुनिक, पौराणिक, परमाणु बम, भय, युगबोध, यद्ध, हिरोशिमा, नागासाकी।

प्रस्तावना

सन् 1954 में प्रकाशित 'अंधा युग' डॉ0 धर्मवीर भारती का एक प्रसिद्ध गीति नाट्य है। इस गीति नाट्य में कुल पाँच अंक है। तीन अंकों के बाद एक अन्तराल और पाँचवे अंक के बाद 'समापन' है। इनके नाम इस प्रकार हैं:–

पहला अंक	–	कौरव नगरी
दूसरा अंक	–	पशु का उदय
तीसरा अंक	–	अश्वत्थामा का अद्ध सत्य
अन्तराल	–	पंख, पहिए और पट्टियां
चौथा अंक	–	गांधारी का शाप
पाँचवां अंक	–	विजय एक क्रमिक आत्महत्या
समापन	–	प्रभु की मृत्यु

पौराणिक पृष्ठभूमि में समकालीन जिंदगी के यथार्थ बोध को प्रक्षेपित या उद्घाटित करने वाले नाटकों के लिए 'अन्धा युग' एक आदर्श उपस्थित करता है। महाभारत के विभिन्न स्त्रोतों से ग्रहण की गई इस काव्य नाटक की कथा में महाभारत के अठाहरवें दिन की संध्या से प्रभास क्षेत्र म कृष्ण की मृत्यु तक की घटनाएँ वर्णित हैं किन्तु महत्वपूर्ण यह पौराणिक आख्यान नहीं अपितु वे आधुनिक युग जीवन की समस्याए हैं जिनके सफल निर्वाह के लिए महाभारत के उत्तरार्द्ध की घटनाओं का आश्रय ग्रहण किया गया है। धर्मवीर भारती ने इस कृति में एक व्यापक सत्य को उपलब्ध करने का प्रयास किया है जो महाभारतकालीन पृष्ठभूमि में इतना महत्वपूर्ण नहीं जितना आधुनिक संदर्भों में। युद्धोत्तरकालीन ह्रासोन्मुखी संस्कृति, ईश्वर और मनुष्यत्व की मृत्यु के अनास्थावादी पाश्चात्य विचारदर्शन, आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था तथा आज के व्यक्ति की मनोग्रंथियों को पुराण सन्दर्भ में पकड़ने की कोशिश धर्मवीर भारती ने 'अन्धा युग' में की है। अतीत को वर्तमान से जोड़ने वाली इस कृति में आधुनिक भावसंवेदन कई स्तरों पर उभरा है। आज की परमाणु संस्कृति में 'अन्धा युग' पौराणिक सन्दर्भ लेते हुए भी आधुनिक है। अपनी आधुनिकता में यह नाटक तीसरे महायद्ध की भयावह संभावना के प्रति त्रस्त मानवता को एक चेतावनी देता है। नाटककार ने सम्भावित तीसरे महायुद्ध में अणु अस्त्रों के प्रलयंकारी भयानक रूप को दिखाने की चेष्टा की है।

धर्मवीर भारती ने 'अंधा युग' में पात्रों, प्रसंगों को उनके ऐतिहासिक परिवेश में सुरक्षित रखकर आधुनिक मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के विकीर्ण प्रकाश में उन्हें नयी व्याख्याओं की भावभूमि से बांधकर नवीनता का स्पर्श दिया।

अपनी आधुनिक संवेदना को वाणी देने के लिए इतिहास की समस्त–सामग्री और सम्पूर्ण स्वर को समेटकर आधुनिक काल स सम्बंद्ध कर सफलता प्राप्त की है।

आधुनिक शब्द का अर्थ एवं स्वरूप

''आधुनिक शब्द अंग्रेजी के 'मॉडर्न' (MODERN) शब्द से बना है। 'मॉडर्न' शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के मोडो (MODO) शब्द से हुई है। मोडो का शाब्दिक अर्थ है– प्रचलन या हाल फिलहाल''[1]

''शब्दकोश में इस शब्द का अर्थ दिया है– MODO-LATELY, JUST NOW और मॉडर्न का अर्थ दिया है– BEING OR EXISTING AT THIS TIME PRESENT अतः वर्तमान में जो कुछ प्रचलन में है, वही आधुनिकता है। इस आधुनिक शब्द से ही 'आधुनिकता' (MODERNITY) शब्द बना है''[2]

1857 की क्रांति, राष्ट्रीय चेतना का विकास, विश्वयुद्धों का प्रभाव, स्वतंत्रता प्राप्ति आदि अनेक ऐसे पड़ाव हैं जिनसे भारत में आधुनिकता का स्वरूप निर्धारित होता है। यद्यपि इसका उदय पश्चिम के प्रभाव से हुआ था किंतु भारतीय आधुनिकता की अवधारणा का मूल्यांकन भारतीय परिप्रेक्ष्य में ही करना होगा। आधुनिकता की अवधारणा 'मनुष्य' को चिंतन का केंद्र बनाकर आगे बढ़ती है। मनुष्य की चिंताए, सुख–दुख, अस्तित्व, संघर्ष, निराशा, जिजीविषा आदि सभी कुछ आधुनिकता के सृजन का माध्यम् बनता है। आधुनिकता आधुनिक जिन्दगी के दबावों, आधुनिक आदमी की सोच और चिंतन , उसके अस्तित्व, उसकी द्वंद्वपूर्ण प्रश्नाकुल और संघर्षशील मानसिकता से बना एक दृष्टिकोण है।

'अन्धा युग' और आधुनिकता

डॉ0 धर्मवीर भारती ने स्वयं कहा है ''यह कथा आज की है अतीत के माध्यम् से।''[3]

''अंधा युग का प्रकाशन सन् 1954 में हुआ है। इसके रचना–काल और युग–बाध पर थोड़ा विचार करने पर कहा जा सकता है कि उस अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मानव दो–दो विश्वयुद्धों की विभीषिका झेल चुका था और विश्व शक्तियाँ दो गुटों में बँटो होने के कारण विश्व–मानव को तीसरे महायुद्ध की संभावना एवं विभोषिका से त्रस्त कर रही थी। राष्ट्रीय स्तर पर भी भारत–पाक विभाजन की त्रासदी को भारतीय जनमानस झेल रहा था। स्वयं युग–द्रष्टा और युग स्रष्टा रचनाकार भारती ने इस युग–पीड़ा को अपनी आँखों से देखा था और अपने मन–आत्मा में भोगा था और यह अनुभव किया था कि द्वितीय महायुद्ध के दौरान जो भयानक ध्वंस, विनाश, रक्तपात हुआ है, मानव के अन्दर मानव के प्रति जो क्रोध, घृणा, प्रतिशोध, पतिहिंसा जैसी विकृत मनोवृतियाँ पनपी है; मान, मर्यादा, आचरण, आस्था, विश्वास, सत्य, स्नेह, समर्पण, त्याग, निष्ठा, सम्बन्ध–प्रगाढ़ता सरीखे नैतिक, धार्मिक और सामाजिक जीवन मूल्यों का ह्रास हुआ है; और इन सबके स्थान पर मनुष्य में जो स्वार्थता, मोहान्धता, बेईमानी, लूट–खसोट, भय, आंतक, कुण्ठा, निराशा, निष्क्रियता, निरर्थकता, पीड़ा, सत्रास आदि विघटनशील मनोवृतियाँ प्रवेश कर गयी हैं, यह सब निश्चय ही वर्तमान मानव और मानव भविष्य क लिए घातक एवं चिंता का विषय है। तब भारती के संवेदनशील रचनाकार ने अपन युग–सत्य को वाणी देने के लिए महाभारत के उस कथा–अंश को 'अंधा युग' में प्रस्तुत किया जो उनके युग से पूरी तरह से मेल खाता था।''[4]

''महाभारत में अश्वत्थामा द्वारा उतरा के गर्भ पर किये गये बह्मास्त्र को कवि ने द्वितीय महायुद्ध के समय अमेरिका द्वारा हिरोशिमा और नागासाकी पर किये गये हमलों के रूप में देखा है।''[5]

यहां कवि ने व्यास के शब्दों के माध्यम् से अश्वत्थामा को कहा है :–

''ज्ञात क्या तुम्हें है परिणाम इस बह्मास्त्र का।
यदि लक्ष्य सिद्ध हुआ आ नरपशु।
तो आगे आने वाली सदियों तक
पृथ्वी पर रसमय वनस्पति नहीं होगी
शिशु होंगे पैदा विकलांग और कुष्ठग्रस्त
सारी मनुष्य जाति बौनी हो जायेगी।
गेह् की बालों में सर्प फुफकारेगें
नदियों में बह–बह कर आयेगी पिघली आग।''[6]

'अन्धा युग' में व्यास बह्मास्त्र प्रयोग से उत्पन्न होने वाले जिस विनाशकारी संकट की ओर संकेत कर रहा है, वह आधुनिक युग में परमाणु बमों के प्रयोग से होने वाले विध्वंसक और विनाशकारी परिणामों का जीता–जागता प्रमाण है। आज कई देशों द्वारा अपनी स्वार्थान्धता और संकुचित राष्ट्र–बोध के कारण दूसरे देशों पर किये जा रहे परमाणु आक्रमण से होने वाले विनाश के विराट् भयावह दृश्य किसी की आँखो से छिपे नहीं हैं।

आधुनिक युग–बोध से सम्पृक्त करते हुए कवि ने प्रथम अंक के प्रारम्भ में 'कथागायन' में लिखा है।

''टुकड़े–टुकड़े हो बिखर चुकी मर्यादा
उसको दोनों ही पक्षों ने तोड़ा है
पाण्डव ने कुछ कम कौरव ने कुछ ज्यादा
यह रक्तपात अब कब समाप्त होना है
यह अजब युद्ध है नहीं किसी की भी जय
दोनों पक्षों को खोना ही खोना है।''[7]

पात्रों के चरित्र में आधुनिकता

'अन्धा युग' में प्रस्तुत कतिपय विशिष्ट घटना–सूत्रों के अतिरिक्त पात्रों के चरित्रांकन के माध्यम् से भी कवि ने कृति के आधुनिक बोध को उभारा है।

धृतराष्ट्र हस्तिनापुर के सिंघासन पर काबिज रहने और अपने पुत्र दुर्योधन की सत्ता को सुरक्षित बनाए रखने के लिए महाभारत–युद्ध का कारण बनता है।

''इस प्रकार देखते हैं कि अंधा युग में चित्रित धृतराष्ट्र का चरित्र केवल धृतराष्ट्र का चरित्र नहीं है वरन् उन सब स्वार्थी आधुनिक नेताओं का चरित्र है जो अस्सी–अस्सी वर्ष पार करने के पश्चात् तन से ढीले–अपंग और मन से थके हारे तथा निष्क्रिय होने के बावजूद भी राष्ट्र–गद्दी से चिपके रहने के लिए न केवल तिकड़में रचते हैं, वरन् चुनावों से ठीक पहले चुनावी–लाभ के लिए राष्ट्र को युद्ध की भट्ठी में झोंक देने में भी कोई संकोच नहीं करते हैं; भले ही उसमें राष्ट्र का कितना बड़ा अहित क्यों न हो।''[8]

''आधुनिकयुगीन विकृत परिस्थितियों और विघटनशील मनोवृति वाले व्यक्तियों के प्रति कवि का आक्रोश गान्धारी के चरित्रांकन के माध्यम से भी व्यक्त हुआ है। गान्धारी की भांति उपने पति, पुत्र तथा परिवार

के मर्यादाहीन आचरण के प्रति तन–मन पर पट्टी बाँधने वालों की कमी आज भी नहीं ह।''[9]

इस नाट्य रचना में भारती जी ने नाटक के महत्वपूर्ण पात्र अश्वत्थामा को एक ऐसे 'अन्ध बर्बर पशु' के रूप में चित्रित किया है जिसकी तुलना आज की आधुनिक परिस्थितियों एवं परिवेश के निर्मम हाथों से पिटे कितने ही युवकों से की जा सकती है, जो प्रतिशोध एवं प्रतिहिंसा की आग में जलते हुए मानवता की हत्या कर रहे हैं। रचनाकार ने अश्वत्थामा के चरित्रांकन के माध्यम् से आधुनिक युग में व्याप्त धृणा, क्रोध कुण्ठा, पीड़ा, प्रतिहिंसा, प्रतिशोध आदि मानव की विघटनशील प्रवृत्तियों को उजागर करने में सफलता प्राप्त की है।

''आधुनिक यग में सभी सिद्धान्त, सभी आदर्श, सभी मान्यताएँ, सभी जीवन–मूल्य खोखले सिद्ध हो रहे हैं; सभी मर्यादाएँ टूट रहीं हैं जिन्हें लक्षित करके आज का मानव इस कटु यथार्थ से परिचित हो गया है कि आधुनिक युग में सत्य और असत्य की कोई शाश्वत परिभाषा करना दुष्कर हो गया है। इसी यथार्थ चिन्तन के आधार पर धर्मवीर भारती ने युयुत्सु के माध्यम् से इस नग्न सत्य का भी उद्घाटन किया है कि चाहे सत्य का वरण करो या असत्य का, अन्त में केवल पीड़ा ही मिलती है।''[10]

युयुत्सु की त्रासदी आधुनिक युग के उन युवकों की त्रासदी है जो परस्पर विरोधी परिस्थितियों से झूजते हुए अपना जीवन–संघर्ष निरन्तर जारी रखते है और आखिर में चारों ओर से उपहास और उपेक्षा के विषय बन कर घुटन, आत्मग्लानि, टूटन, अवसाद, निराशा का दंश सहते हुए आत्महत्या कर लेने को विवश होते हैं। संजय तटस्थ बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। संजय को दिव्य दृष्टि प्राप्त है, किन्तु वह मोहनिशा से घिरकर असमंजस के वन में भटकने लगता है।

''अंधा युग के श्री कृष्ण मर्यादा तथा दायित्व के प्रतीक हैं, निर्भय तथा मुक्त आचरण के प्रतिष्ठापक हैं। वे 'प्रभु' हैं अवश्य, पर उनकी अनासक्त कर्म–पद्धति स्वयं उनसे भी बड़ी है। इतिहास नियन्ता इस कृष्ण का चरित्रांकन गीता से काफी प्रभावित है परन्तु इसे मानवतावादी धरातल पर प्रतिष्ठित करना नाटककार के आधुनिक युग–बोध का परिचायक है।''[11]

''मिथक प्रयोग द्वारा आज के यद्धोत्तर विघटित मूल्यों और मर्यादाओं का अन्वेषण धर्मवीर भारती ने महाभारत युद्ध के परिणामों में किया है। वस्तुतः आधुनिकता के संदर्भ में इनकी खोज करना ही प्रस्तुत काव्य नाटक की मूल संवेदना है।''[12]

''मानवता की 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की साधना 'ज्योतिषों मा तमा गमय' परिवर्तित हो जाती है। युद्ध इसो परिस्थिति की उपज है। युद्ध के बाद जो मूल्यांधता या मर्यादा–हीनता का युग उपस्थित होता है, उसी का चित्रण 'अंधा युग' का उद्देश्य है।''[13]

निष्कर्ष

धर्मवीर भारती ने इस कृति में वर्तमान जीवन में व्याप्त विसंगतियों के साथ–साथ विघटित मानव–मूल्यों एवं कुचली मर्यादाओं का सशक्त चित्रण किया ह। महाभारत का वह विनाशकारी युद्ध आधुनिक युग के अन्धेपन को पूर्णतः व्यक्त कर देता है। आधुनिक युगबोध की अभिव्यक्ति भी 'अंधा युग' के लेखक का उद्दश्य है, इसी कारण नाटक में प्रतीकात्मकता का निर्वाह हुआ है। इस नाटक में रचनाकार ने अतीत के पट पर वर्तमान का चित्र अंकित किया है। महाभारत की इस कथा के माध्यम् से भारती जी ने वस्तुतः वर्तमान युग की समस्याओं का ही निरूपण किया है। आज परमाणु अस्त्रों की प्रलयंकारी विनाशक क्षमता से सम्पूर्ण विश्व आशंकित एवं भयाक्रान्त है। युद्ध की क्या उपलब्धि है ओर अन्ततः युद्ध में विजय कितनी बड़ी कीमत चुकाकर प्राप्त की जाती है ये ऐसे प्रश्न हैं, जो मानव की बुद्धि एवं हृदय की सदैव मथते रहे हैं। 'अंधा युग' इन्हीं प्रश्नों से उत्पन्न अकुलाहट एवं बेचैनी को आधुनिकता के संदर्भ में अभिव्यक्त करने का भारती जी का स्तुत्य प्रयास है। इसलिए यह कृति आज भी प्रासंगिक है।

संदर्भ सूची

1. 'प्रतियोगिता दर्पण– मई 1997, पृ0 स0 1706 ।
2. डॉ0 गो0 रा0 कुलकर्णी– पौराणिक काव्य : आधुनिक संदर्भ, पृ0 स0 17 ।
3. कादंबिनी – (जून, 73 ई0), पृ0 स0 73 ।
4. डॉ0 माया मलिक – अंधा युग रचनाधर्मिता के विविध आयाम, स्वराज प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006, पृ0 स0 79,80 ।
5. वही – पृ0 स0 85 ।
6. अंधा युग – पृ0 स0 94,95 ।
7. वही – पृ0 स0 13 ।
8. डॉ0 माया मलिक – अंधा युग रचनाधर्मिता के विविध आयाम, स्वराज प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006, पृ0 स0 86,87 ।
9. वही – पृ0 स0 87 ।
10. वही – पृ0 स0 88 ।
11. जयदेव तनेजा – समसामयिक हिन्दी नाटकों में चरित्र सृष्टि, सामयिक प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1971, पृ0 सृ0 97 ।
12. रमेश गौतम – समकालीनता के अतीतोन्मुखी नाटक, नचिकेता प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1979, पृ0 स0 92,93 ।
13. डॉ0 चन्द्रभानु सीताराम सोनवणे– धर्मवीर भारती का साहित्य सृजन के विविध रंग, पंचशील प्रकाशन जयपुर, प्रथम संस्करण 1979, पृ0 स0 59 ।